ISSN : 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

गाँधी दर्शन में सत्य और अहिंसा

डॉ0 ज्योत्स्ना गौतम,

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0

शोध सारांश

सत्य आत्मा का गुण है, प्राकृतिक नियम सत्य पर आधारित है, भारतीय विचार दर्शन में प्रारम्भ से ही सत्य एवं अहिंसा के विचार को विस्तृत रूप से व्याख्यायित किया गया है। भीष्म द्वारा महाभारत में सत्यपरायणता, न्यायवादिता, आत्मसंयम, आडम्बरहीनता, क्षमा, नम्रता, सहिष्णुता, अनसूया, परोपकार, आत्मजय, दया और अहिंसा को सत्य के रूप में परिभाषित किया गया है। मनु के विचारों एवं बौद्ध दर्शन में भी सत्य, अहिंसा के विचार दृष्टव्य हैं। वर्तमान समय में गाँधीजी द्वारा भारतीय प्राचीन सत्य, अहिंसा के विचार दर्शन की महत्ता को पुनर्स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है। गाँधीजी द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरोध के लिए भारतीय जन एवं समाज के नैतिक उत्थान की आवश्यकता को अनुभव किया गया, फलतः उन्होंने सत्य और अहिंसा के अपने विचार संदेश द्वारा जनमानस को नैतिक बल प्राप्ति के तैयार करने का प्रयत्न किया गया। गाँधीजी के अनुसार सत्य क्या है, सत्य की परिधि, नैतिक व्रतों में सत्य का स्थान, अहिंसा का अभिप्राय, अहिंसा के आधार, अवस्थायें, धारणायें, इतिहास के आधार पर अहिंसा की श्रेष्ठता का प्रतिपादन अहिंसा की उपादेयता और अहिंसा की सीमाओं का उल्लेख किया है।

मुख्य शब्द – *सत्य, अहिंसा, गाँधीजी, अन्तर्रात्मा, प्रेम*

आधुनिक भारत के महान जननायक, समाज सुधारक और दार्शनिक मोहनदास करमचन्द गाँधीजी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को काठियावाड़ के पोरबन्दर नामक स्थान में एक सम्पन्न गुजराती परिवार में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात 1888 में बैरिस्ट्री की शिक्षा हेतु गाँधीजी इंग्लैण्ड गये, कानून की डिग्री लेने के पश्चात भारत आकर राजकोट में वकालत आरम्भ की, बाद में एक मुकदमे की पैरवी के सम्बन्ध में वे दक्षिणी अफ्रीका गये, जहाँ अंग्रेज सरकार के द्वारा प्रवासी भारतीयों के भिन्न–भिन्न प्रकार से किये जा रहे उत्पीड़न के विरुद्ध इन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया एवं अपने प्रमुख शस्त्र सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से भारतीयों को मानवाधिकार दिलाने में महती सफलता प्राप्त की। इस आन्दोलन की सफलता भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की मार्गदर्शक बनी। 1914 में गाँधीजी एक सफल आन्दोलनकारी के रूप में भारत में वापस आये एवं गोपाल कृष्ण गोखले की राजनीतिक शिक्षाओं को ग्रहण कर एक परिपक्व राजनीतिज्ञ के रूप में भारतीय राजनीति में अवतीर्ण हुए। प्रारम्भ में गाँधीजी अंग्रेजों की उदारवादिता से प्रभावित थे, बाद में उन्होंने ब्रिटिश सरकार की भारत में नीतियों एवं उसके कार्यान्वयन का अध्ययन एवं अवलोकन किया। 1915 में देशवासियों को सत्याग्रह के पथ पर चलने के लिए प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से 'सत्याग्रह आश्रम' की स्थापना की जो 1917 में वर्तमान साबरमती आश्रम में स्थानान्तरित हुआ। 1917 में चम्पारन में नील की खेती करने वाले किसानों के उत्पीड़न का प्रतिरोध गाँधीजी के द्वारा अपने अहिंसा रूपी शस्त्र के प्रयोग के माध्यम से किया

गया, जिसमें उन्हें अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् की घटनाओं, यथा–रौलेट एक्ट, जलियांवाला बाग काण्ड, हंटर कमेटी की रिपोर्ट आदि ने गाँधीजी की अंग्रेज सरकार के प्रति आस्था को समाप्त कर दिया। तत्पश्चात उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध उग्र आन्दोलन का नेतृत्व किया। गाँधीजी द्वारा तीन प्रमुख आन्दोलन चलाये गये, प्रथम 1920 में असहयोग आन्दोलन, जिसके हिंसक स्वरूप में ले लेने के उपरान्त गाँधीजी को आन्दोलन वापस लेने का निर्णय करना पड़ा। द्वितीय 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन, जिसमें उन्होंने साबरमती में दाण्डी तक की पैदल यात्रा की और नमक बनाकर ब्रिटिश सरकार के नमक कानून का उल्लंघन किया। तृतीय भारत छोड़ो आन्दोलन में इन्होंने 'करो या मरो' का नारा देकर भारतीय स्वतन्त्रता के लिए जनमानस को तैयार किया, फलतः 1947 में भारत को स्वतन्त्रता प्राप्ति हुई। 1947 में हुए भारत विभाजन का गाँधीजी द्वारा प्रतिरोध किया गया था, उन्होंने कहा कि, ''भारत का विभाजन मेरी लाश पर होगा'', किन्तु तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के कारण गाँधीजी ने अपने सिद्धान्तों, आदर्शों, विचारों की हत्या कर भारत विभाजन को स्वीकार किया। गाँधीजी द्वारा विभाजन के पश्चात् सम्पूर्ण देश में फैली हिंसा और साम्प्रदायिकता की अग्नि को शान्त करने में अपने आपको असमर्थ पाकर स्वाधीनता दिवस पर पूरे देश में होने वाले उल्लास पूर्ण आयोजनों से स्वयं को विमुख रखा। सरलता एवं सादगी के धनी गाँधीजी का 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे की गोली का शिकार होने के पश्चात् देहावसान हो गया।

गाँधीजी द्वारा जीवनपर्यन्त ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जड़ों पर प्रहार किया, संसार को आध्यात्मिकता का संदेश दिया, जनता को शान्तिपूर्ण आन्दोलन के लिए प्रशिक्षित किया तथा रचनात्मक कार्यों, जैसे–हरिजन उद्धार, स्त्री शिक्षा, बुनियादी शिक्षा, खादी स्वदेशी का प्रयोग एवं कुटीर उद्योगों के विकास पर बल दिया। गाँधी जी के जीवन पर प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थों, जैसे–पतंजलि का योग सूत्र, उपनिषद, रामायण, गीता आदि का विशेष प्रभाव रहा। बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की शिक्षा अहिंसा को अनुप्रेरित होकर एवं अपने राजनीतक लक्ष्यों की प्राप्ति का शस्त्र बनाया। गीता को गाँधीजी भविष्य की चुनौतियों के समाधान के रूप में सक्षम समझते थे। विश्व के सभी प्रमुख धर्मों का गाँधीजी के जीवन पर प्रभाव पड़ा। वे कुरान और बाइबिल से भी प्रभावित थे, बाइबिल उनकी प्रिय पुस्तक थी, गाँधीजी ने लिखा कि बाइबिल में ईसा का 'पर्वत प्रवचन' पढ़कर उनकी आत्मा जाग्रत हो उठी एवं इसी से प्रेरित होकर उन्होंने अहिंसा एवं सत्याग्रह के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। गाँधीजी ने यहूदी धर्म से 'प्रेम एवं अहिंसा' का विचार ग्रहण किया तथा अमेरिकी चिन्तक थोरो के सविनय अवज्ञा सम्बन्धी भाषण (1849), रस्किन के ग्रन्थ 'अनटू दिस लास्ट' से भी अत्यन्त प्रभावित हुए, जिस कारण ये सर्वोदयी बने। गाँधीजी टॉल्स्टाय की कृति 'स्वर्ग तुम्हारे अन्दर है' को प्रेरित होकर उन्होंने लिखा कि, ''इस पुस्तक ने मेरी समस्त शंकाओं को दूर कर दिया है, मुझे अहिंसा में दृढ़ विश्वास करने वाला बना दिया है।''

गाँधीजी ने अपने विचारों, प्रयोगों एवं सिद्धान्तों का विवेचन अपनी पुस्तकों के लेखन में और साप्ताहिक पत्रों के सम्पादन के रूप में किया है। उनके द्वारा रचित पुस्तक खादी, सर्वोदय सत्याग्रह, गीता बोध, ग्राम सेवा, आत्मशुद्धि, राष्ट्रवाणी, हिन्द स्वराज्य, दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह और मेरे सत्य के प्रयोग आदि हैं। उन्होंने अनेक साप्ताहिक पत्रों, दक्षिण अफ्रीका में इण्डियन ओपिनियन, भारत में यंग इण्डिया, हरिजन, हरिजन संवाद, हरिजन बंधु और नवजीवन आदि का सम्पादन किया।

गाँधीजी द्वारा व्यक्ति और समाज के नैतिक उत्थान के उद्देश्य से अनेक सिद्धान्तों की

खोज की, जिनमें सत्य और अहिंसा सर्वोपरि है, यह एक–दूसरे के पूरक एवं अविभाज्य हैं। सत्य क्या है, इस विषय में गाँधीजी द्वारा कहा गया कि ''यह एक कठिन प्रश्न है परन्तु स्वयं अपने लिए मैंने इसे हल कर लिया है, तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहती है, वही सत्य है। शुद्ध अन्तरात्मा से ही सत्य को ग्रहण किया जा सकता है, क्योंकि शुद्ध अन्तरात्मा की आवाज ही सत्य हो सकती है, सत्य और अहिंसा के आदर्श गाँधीजी के लिए जीवन के मूल मन्त्र थे, जिनके माध्यम से उन्होंने अपने राजनीतिक क्रियाकलाप की तकनीक विकसित की।

गाँधीजी के अनुसार सत्य और ईश्वर दोनों एक हैं, सत्य के विषय में गाँधीजी का मत है कि सत्य 'सत' शब्द से उत्पन्न हुआ है, जिसका अभिप्राय है 'अस्तित्व'। सत्य को ईश्वर कहने का अभिप्राय यह है कि सत्य वही है जिसकी सत्ता होती है, ईश्वरीय सत्ता तीनों कालों में वर्तमान रहती है, यह सत्य है। सत्य की खोज ही गाँधीजी के जीवन का लक्ष्य था। उन्होंने अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' के अन्तर्गत जीवन के अनुभवों को पूरी सत्यनिष्ठा के साथ अभिव्यक्त किया है। गाँधीजी ने सत्य शब्द का व्यापक अर्थ लेते हुए निरन्तर आग्रह किया कि वाणी और आचरण में सत्य का परिलक्षित होना ही सत्य है, उनके अनुसार सत्य की आराधना ही सच्ची भक्ति है। गाँधीजी अपने नैतिक व्रतों में सत्य को सर्वोच्च स्थान देते हैं, उनके अनुसार सत्य के दो स्वरूप हैं, प्रथम–व्रत या साधन रूप सत्य, द्वितीय– आंशिक या सापेक्ष सत्य। गाँधीजी के अनुसार सामान्य जीवन में सत्य सापेक्ष है, उनका मत है कि सापेक्ष सत्य के माध्यम से निरपेक्ष सत्य तक पहुँचा जा सकता है। निरपेक्ष सत्य जीवन का परम साध्य है। इसकी प्राप्ति ही व्यक्ति का सर्वोच्च धर्म है। सत्य की खोज एवं ज्ञान के माध्यम से ही सत्य का साक्षात्कार किया जा सकता है किन्तु दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियों द्वारा निरपेक्ष सत्य से साक्षात्कार सम्भव नहीं है, क्योंकि इसके लिए अन्तरात्मा की शुचिता का होना परमआवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब व्यक्ति अपने विचारों एवं आचरण में सत्य का प्रयोग करे, तत्पश्चात ही वह सापेक्ष सत्य के माध्यम से निरपेक्ष सत्य तक पहुँचा जा सकता है। गाँधीजी की सत्य की परिधि में केवल व्यक्ति ही नहीं अपितु समूह तथा समाज भी सम्मिलित है, उनका मत था कि सत्य का पालन सभी क्षेत्रों में होना चाहिए।

अहिंसा का विचार भारत के विचार, चिन्तन, समाज एवं संस्कृति में प्राचीन काल से ही प्रवाहित रहा है। योगगुरु पतंजलि ने आत्मा की शुचिता की साधना के पाँच यमों में अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया है। जैन धर्म में भगवान महावीर ने अहिंसा को महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहा कि, ''सम्पूर्ण प्राणिमात्र के प्रति संयम रखना ही अहिंसा है।'' गौतम बुद्ध ने भी जीव हत्या का विरोध किया है। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा कि विद्वतजन हिंसा नहीं करते हैं, क्योंकि उन्हें ज्ञात है कि ईश्वर सर्वव्यापी है तथा हिंसा आत्मघात के समकक्ष है, ऐसे ज्ञानी व्यक्ति का हृदय शुद्ध और पूर्ण रूप से विकसित हो चुका होता है, इसलिए वह सद्गति को प्राप्त करता है। गाँधीजी के अनुसार अहिंसा सभी जीवों में सम्भव है, उन्होंने भारतीय परम्परा, बाइबिल के 'पर्वत प्रवचन' एवं टॉलस्टाय के ग्रन्थों से अहिंसा के सिद्धान्त को ग्रहण किया तथा अनेक क्षेत्रों में इसको कार्यरूप में परिणित कर इसकी सफलता को संदेह रहित प्रमाणित किया।

अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है 'हिंसा न करना', किन्तु गाँधीजी के अनुसार स्वार्थ, क्रोध या विद्वेष जैसी भावनाओं पर विजय प्राप्त करना प्राणिमात्र के प्रति प्रेम और मैत्री का भाव रखना ही अहिंसा है। गाँधीजी के अनुसार अहिंसा सत्य को सिद्ध करने का साधन है। उनके मतानुसार सत्य की प्राप्ति अहिंसा के पालन से सम्भव है, गाँधीजी का अहिंसा से आशय प्रेम और त्याग है।

उनका विचार था कि दुनिया की कोई भी शक्ति अहिंसा का सामुख्य नहीं कर सकती, वे जीवन के सभी क्षेत्रों में अहिंसा के पालन पर बल देते थे। गाँधीजी ने कहा कि सत्य और अहिंसा के समन्वय में संसार को नतमस्तक करने की क्षमता है, उन्होंने अहिंसा को सर्वोच्च सक्रिय शक्ति स्वीकार किया तथा माना कि यह आत्मबल का प्रतिफल है।

गाँधीजी ने अहिंसा के दो पक्ष बताये हैं– नकारात्मक अहिंसा और सकारात्मक अहिंसा। प्रथम अहिंसा का नकारात्मक स्वरूप वह है, जिसमें किसी प्राणि को काम, क्रोध एवं विद्वेष के वशीभूत होकर कष्ट न पहुँचाया जाय, द्वितीय अहिंसा के सकारात्क स्वरूप को सार्वभौम प्रेम एवं करुणा भी कहा जाता है। इसके मूल तत्व प्रेम, धैर्य, अन्याय का विरोध और वीरता है। गाँधीजी के मतानुसार अहिंसा का आधार 'प्रेम' अहिंसक व्यक्ति को अपने कट्टर शत्रुओं से भी वैसा ही प्रेम करना सिखाता है, जैसा माता–पिता बुरा कार्य करने वाली सन्तान से करते हैं। अहिंसक व्यक्ति शत्रु से नहीं उसकी बुराई से घृणा करता है। वह शत्रु की बुराई को अहिंसा एवं प्रेम के माध्यम से दूर करने का प्रयत्न कर उसे कष्टों से बचाने का प्रयत्न करता है। गाँधीजी ने 'हरिजन' में अपने लेख में लिखा, ''तुम सत्याग्रही नहीं हो सकते यदि तुम अपने विरोधियों को मरते देखकर भी निष्क्रिय बने रहते हो, तुम्हें उसके जीवन की रक्षा हर कीमत पर करनी चाहिए। भले ही तुम्हें इसके लिए अपनी जान की बाजी क्यों न लगानी पड़े।'' अहिंसा के द्वितीय तत्व 'धैर्य' के विषय में गाँधीजी का मत है कि अहिंसक व्यक्ति सफल न होने पर भी निराश नहीं होता है और धैर्यपूर्वक अपने पथ पर अग्रसर रहता है, क्योंकि उसे अपने ब्रह्मास्त्र (अहिंसा) पर विश्वास होता है कि वह सफल अवश्य होगा। अहिंसा का तृतीय तत्व 'प्रतिरोध' का आशय है– बुराई तथा अन्याय का निरन्तर प्रतिकार। अहिंसक व्यक्ति अत्याचारी का वीरतापूर्वक सामना करता है। गाँधीजी के अनुसार अहिंसा, साहसी और वीर पुरुषों का गुण है, निर्बलों, कायरों का शस्त्र नहीं।

गाँधीजी ने अन्धकार और प्रकाश के समान कायरता और अहिंसा को एक–दूसरे का विरोधी माना है। उनका मत है कि अहिंसा के प्रयोग का तभी तक महत्व है जब हम शक्तिशाली एवं सामर्थ्यवान होते हुए भी इसे प्रयोग में लायें। अहिंसक व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ गुण वीरता एवं निर्भयता एवं सबसे बड़ा शस्त्र उसका आत्मबल है। वीरतापूर्ण आत्मबल के अभाव में गाँधीजी हिंसा और बल प्रयोग को अधिक श्रेष्ठ समझते थे। गाँधीजी ने कहा कि, ''विदेशी राज्य के सामने दीनभाव से अपनी प्रतिष्ठा खोने की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा है कि भारत शस्त्र धारण करके आत्मसम्मान की रक्षा करे।'' गाँधीजी की अहिंसा अद्वैत भाव पर आधारित है, अद्वैत की भावना ही सृष्टि के सभी प्राणियों के प्रति आत्मरूप होने के कारण प्रेम और अहिंसा के धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित करती है।

गाँधीजी के अनुसार अहिंसा की तीन अवस्थायें हैं, सर्वप्रथम 'जाग्रत अहिंसा', यह अहिंसा की वह अवस्था है जो अन्तरात्मा की स्वाभाविक पुकार से जन्म लेती है। इसे वह लोग आत्मसात कर सकते हैं, जिनमें आन्तरिक विचारों की उत्कृष्टता एवं नैतिकता हो। अहिंसा के इस रूप में असम्भव को सम्भव बनाने की अद्भुत शक्ति होती है। द्वितीय 'औचित्यपूर्ण' अहिंसा को जीवन के किसी क्षेत्र में विशेष आवश्यकता के कारण एक नीति के रूप में अपनाया जाता है। ईमानदारी, सच्चाई, दृढ़ता पर इसकी सफलता निर्भर करती है। गाँधीजी ने भीरु और कायर व्यक्तियों की अहिंसा को अहिंसा न मानकर निष्क्रिय हिंसा माना है। गाँधीजी का मत था कि, ''कायरता और अहिंसा पानी और आग की भाँति एक साथ नहीं रह सकते'', अहिंसा वीरों का धर्म है, अपनी कायरता को अहिंसा के आवरण में छिपाना निन्दनीय तथा घृणित है, कायरों को

अहिंसा का उपदेश देना वैसा ही है, जैसे—एक अन्धे व्यक्ति को सुन्दर दृश्यों को देखने के लिए प्रेरित करना। कायरता और हिंसा में से एक के चयन के विषय में गाँधीजी ने कहा कि, ''यदि हमारे हृदय में हिंसा भरी है तो हम अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए अहिंसा का आवरण पहने, इससे तो हिंसक होना अधिक अच्छा है।''

गाँधीजी ने इतिहास के आधार पर अहिंसा की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया है। उन्होंने माना है कि अहिंसा वह शक्ति है जो सभी व्यक्तियों में पायी जाती है, अहिंसा का आत्मबल शत्रु पर अचेतन एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है। अहिंसा और प्रेम का प्रभाव स्थायी होता है, प्रेम की शक्ति का प्रयोग मानव एवं पशुओं दोनों पर किया जा सकता है। गाँधीजी के अनुसार हिंसा की विफलता और अहिंसा की सफलता निश्चित है, क्योंकि अहिंसा और प्रेम में पत्थर जैसे हृदयों को भी पिघलाने की सामर्थ्य है। गाँधीजी अहिंसा के सिद्धान्त को आपसी सम्बन्धों के लिए आवश्यक मानते थे, वे युद्ध उन्माद तथा शस्त्र—प्रदर्शन को पतन का प्रतीक तथा अहिंसा को एक विकल्प के रूप में देखते थे। उन्होंने लिखा, ''जब दोदेश युद्ध कर रहे हों तो अहिंसा के व्रतियों का कर्त्तव्य है कि युद्ध को रोके तथा इस हेतु प्रयास करे।''

गाँधीजी ने माना कि शान्ति का मार्ग ही सत्य का मार्ग है तथा असत्य हिंसा की जननी है। गाँधीजी रक्षा करने वाले व्यक्ति को सभी नैतिक समर्थन देने के समर्थक थे। गाँधीजी का विश्वास था कि सामूहिक रूप से अहिंसा का प्रयोग किया जा सकता है। अहिंसक आन्दोलन अधिक अनुशासनबद्ध होता है, अहिंसा की मान्यता सर्वव्यापी होती है।

गाँधीजी ने अहिंसा की व्यावहारिकता के विषय में स्पष्ट किया कि हिंसा से हमेशा मुक्त होना मनुष्य के लिए सम्भव नहीं है। पूर्ण अहिंसा की सिद्धि मनुष्य के लिए सम्भव नहीं है। गाँधीजी ने ऐसी परिस्थितियों का भी उल्लेख किया है जिसमें मनुष्य हिंसा के लिए बाध्य हो जाता है। उन्होंने जीवन के भरण—पोषण के लिए की गयी हिंसा का समर्थन किया है। किन्तु जानबूझकर अन्य जीवों की हत्या शरीर के पोषण एवं संरक्षण के लिए नहीं की जानी चाहिए। गाँधीजी अहिंसा के सम्बन्ध में व्यावहारिक थे, उन्होंने ऐसी जीव हत्या को अनुमति दी है जो मनुष्यों या उसकी सम्पत्ति को हानि पहुँचाती हो। उन्होंने इसे आपातकालीन कर्त्तव्य कहा है, गाँधीजी का मत था कि यदि मनुष्य अहिंसा का पालन यथोचित रूप से करे तो हिंसक जीव भी मनुष्य को हानि नहीं पहुँचायेंगे। गाँधीजी के विचार में शरणार्थी की रक्षा के लिए की गयी हिंसा अनिन्दनीय है। यदि कोई हमारे आश्रित के जीवन को संकट में डालने का प्रयास करता है तो उसका वह कार्य हिंसा के अन्तर्गत नहीं आता है। गाँधीजी का मत है कि व्यक्ति को उसके दुःखों से मुक्ति देने के लिए यदि उसकी हत्या आवश्यक हो तो ऐसी हिंसा अपराध नहीं है।

गाँधीजी के सत्य अहिंसा के विषय में विचारों के विश्लेषण उपरान्त निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गाँधीजी एक राष्ट्रीय आन्दोलनकर्ता ही नहीं, वरन एक राजनीतिक चिन्तक भी थे। उन्होंने व्यक्ति और समाज के नैतिक उत्थान के उद्देश्य से सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। गाँधीजी द्वारा सत्य का अन्तरात्मा से सम्बन्ध स्थापित किया गया है। यह केवल शब्द ही नहीं है, वाणी एवं विचारों की सत्यता भी इसमें समाहित है। गाँधीजी ने सत्य को ईश्वर के साथ संयुक्त कर कहा कि सत्य ही ईश्वर है। इसके अभाव में जीवन में किसी नियम का पालन कठिन है, सत्य सभी परिस्थितियों में उपयोगी है। उन्होंने सत्यपालन को सभी क्षेत्रों में आवश्यक माना है, लक्ष्य की प्राप्ति, आन्तरिक आत्मा की शक्ति सत्य द्वारा ही सम्भव है, सत्य हमेशा शुभकारी है, सत्य स्थायी है।

अहिंसा को गाँधीजी ने सत्य प्राप्ति का साधन स्वीकार किया है, जिसके समक्ष दुनिया की समस्त शक्तियाँ क्षीण हैं। गाँधीजी ने अहिंसा को समाज में अहिंसा के प्रयोग का प्रेरक, राजनीति में सुधार का सर्वोत्तम साधन, अहिंसा को सकारात्मक करुणा एवं प्रेम का पर्याय, वैश्विक शान्ति एवं एकता निश्चित करने की शक्ति, वीरता का प्रतीक, एक युद्ध के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया।

गाँधीजी ने अहिंसा के व्यवहार के लिए सत्य और अहिंसा की करुणा एवं अगाध श्रद्धा को आवश्यक बताया। उन्होंने सत्य एवं अहिंसा के विषय में कहा कि इनमें पत्थर हृदय को द्रवित करने की क्षमता है, अहिंसा एवं सत्य के प्रति आस्था का उदय आध्यात्मिक एवं ईश्वरीय प्रेम से सम्भव है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि राजनीति में सत्य के पूर्ण पालन का उनका नया प्रयोग विश्व के लिए स्मरणीय है तथा प्रत्येक राज्य के लिए अहिंसा एक साधन है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। लेकिन वर्तमान में अहिंसा का विचार लोगों के मध्य बहुत विश्वसनीय है। चारों ओर विश्व में हिंसा एवं मूल्यहीनता का वातावरण दिखाई देता है। विश्व के चतुर्दिक विकास के लिए गाँधीजी का सत्य और अहिंसा का मार्ग आज विश्व के लिए अति आवश्यक हो गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अवस्थी डॉ0 ए0, अवस्थी डॉ0 आर0के0, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002
2. आशीर्वादम ए0डी0, मिश्र कृष्णकान्त, राजनीतिक विज्ञान, एस0 चांद एण्ड कम्पनी प्रा0लि0, नई दिल्ली, 2016
3. गाबा ओ0पी0, भारतीय राजनीतिक विचारक, नेशनल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 2017
4. गाँधी महात्मा, अहिंसा और सत्य, उत्तर प्रदेश गाँधी स्मारक निधि सेवा, पुरी, वाराणसी, 1999
5. ग्रोवर बी0एल0 यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहासः एक नवीन मूल्यांकन, एस0 चांद एण्ड कम्पनी प्रा0लि0, नई दिल्ली, 1988
6. नागर डॉ0 पुरुषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1989
7. मोहन धीरेन्द्र, महात्मा गाँधी का दर्शन, बिहारी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1983
8. वर्मा वी0पी0, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2010–11
9. Mahajan V.D., Modern Indian History, S. Chand & Company Pvt. Ltd., New Delhi, 1988
10. Puri B.N., The Indian Freedom Struggle: A Surgey, M.N. Publisher, New Delhi, 1988